काव्य स्वरूप

(बी0ए0 द्वितीय सेमेस्टर)

प्रस्तुति – डॉ0 क्षमा मिश्रा

असिस्टेन्ट प्रोफेसर हिन्दी विभाग

श्री जे0एन0पी0जी0कॉलेज ,लखनऊ

काव्य से तात्पर्य

सत्य की सौन्दर्यमयी आनन्दानुभूति का शब्दावतार ही काव्य है ।

यद्यपि काव्य के सूक्ष्म एवं व्यापक स्वरूप को शब्दों में बॉधना कठिन कार्य है परन्तु सहृदय रसिकों , प्रबुद्ध समीक्षकों ,मेधावी कवियों के द्वारा विशिष्ट देश कालानुसार काव्य स्वरूप को पारिभाषित करते हुए लक्षण प्रस्तुत किये गए हैं । जिसकी एक सुदीर्ध परम्परा हमें प्राप्त है ।

संस्कृत काव्यशास्त्रीय परम्परा में काव्य का स्वरूप

काव्य का सर्व प्रथम लक्षण

अग्निपुराण –

संक्षेपाद्वाक्यमिष्टार्थ व्यवच्छिन्ना पदावली ।

काव्यं स्फुदलंकारं गुणवद्दोषवर्जितम ।।

इष्ट अर्थ को अभिव्यक्त करने वाली पदावली से समृद्ध प्रत्यक्ष रूप में अलंकारयुक्त ,गुणयुक्त और दोषवर्जित वाक्य काव्य है ।

क्रमश:.....

भामह (छठी शताब्दी वि0)

"शब्दार्थौ सहितौ काव्यं । "

(काव्यालंकार १ / १६)

शब्द और अर्थ का संयुक्त रूप काव्य है ।

आचार्य दण्डी (सातवीं शती वि0)

"शरीरं ताविदिष्टार्थ व्यवच्छिन्ना पदावली ।"

(काव्यादर्श १/ १०)

इष्टअर्थ को व्यक्त करने वाली पदावली तो काव्य का शरीर मात्र है ।

क्रमशः.....

विश्वनाथ (१४ वीं शती १३००–१३५०)

"वाक्यं रसात्मकं काव्यम् । "

(साहित्य दर्पण)

पं0 जगन्नाथ (१७वीं शती)

"रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम् । "

(रसगंगाधर)

पाश्चात्य काव्यशास्त्रियों के काव्य लक्षण

Dryden (17century)

"Poetry is articulate music ."

Wordsworth (1800 Century)

"Poetry is the spontaneous overflow of powerful feelings ; it makes its origin from emotion recollected in tranquality ."

(Preface to Lyrical Ballads)

पाश्चात्य विचारकों के अनुसार –

Coleridge (1817 Century)

"Poetry is thebest words in best order ."

Shelley (1792-1822)

"Poetry is the record of the best and happiest moments of the happiest and best minds ."

Mathew Arnold (1822-1888)

" Poetry is ,at bottom , a criticism of life ."

हिन्दी आचार्य रीतिकालीन

चिन्तामणि

गुण और अलंकार सहित तथा दोषरहित शब्द एवं अर्थ को विबुध जन काव्य कहते हैं ।

कुलपति

लोक विलक्षण सुखदायी शब्दार्थ काव्य है ।

देव

समर्थ काव्य का परिचय देते हुए छन्द, भाव, भूषण और रस से युक्त शब्दार्थ को काव्य कहते हैं ।

हिन्दी आधुनिक विचारक

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

अन्त:करण की वृत्तियों के चित्र का नाम कविता है ।

श्यामसुंदर दास

काव्य वह है जो हृदय में अलौकिक आनंद या चमत्कार की सृष्टि करें ।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

हृदय की मुक्तावस्था के लिए वाणी जो शब्द विधान करती है उसे ही काव्य कहा जाता है ।

जयशंकर प्रसाद

काव्य को आत्मा की संकल्पात्माक अनुभूति कहा जिसका संबंध विश्लेषण विकल्प या विज्ञान से नही । वह एक श्रेयमयी प्रेय रचनात्मक ज्ञानधारा है ।

सुमित्रानंदन पंत

काव्य हमारे परिपूर्ण क्षणों की वाणी है ।

आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी

काव्य तो प्रकृत अनुभूतियों का नैसर्गिक कल्पना के सहारे ए `सा सौन्दर्यमय चित्रण है जो मनुष्य मात्र में स्वभावतः अनुरूप भावोच्छवास और सौन्दर्य संवेदन उत्पन्न करता है ।

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं

"काव्य सत्य की कल्पना रंजित रमणीय वर्णमय अभिव्यक्ति है ।"